

चिड़ियाघर की सैर







प्रथम संस्करण १९८३

प्रकाशक : **विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह**
२४ पाएवानच्वाङ मार्ग, पेइचिङ

मुद्रक : **विदेशी भाषा मुद्रणालय**
१९ पश्चिमी छकुङच्वाङ मार्ग, पेइचिङ

वितरक : **चीनी प्रकाशन विक्रयकेन्द्र (क्वोची शूत्येन)**
पो. आ. बाक्स ३९९, पेइचिङ

चीन लोक गणराज्य में मुद्रित



चिड़ियाघर की सैर

शब्दकार : लिन मुङइङ

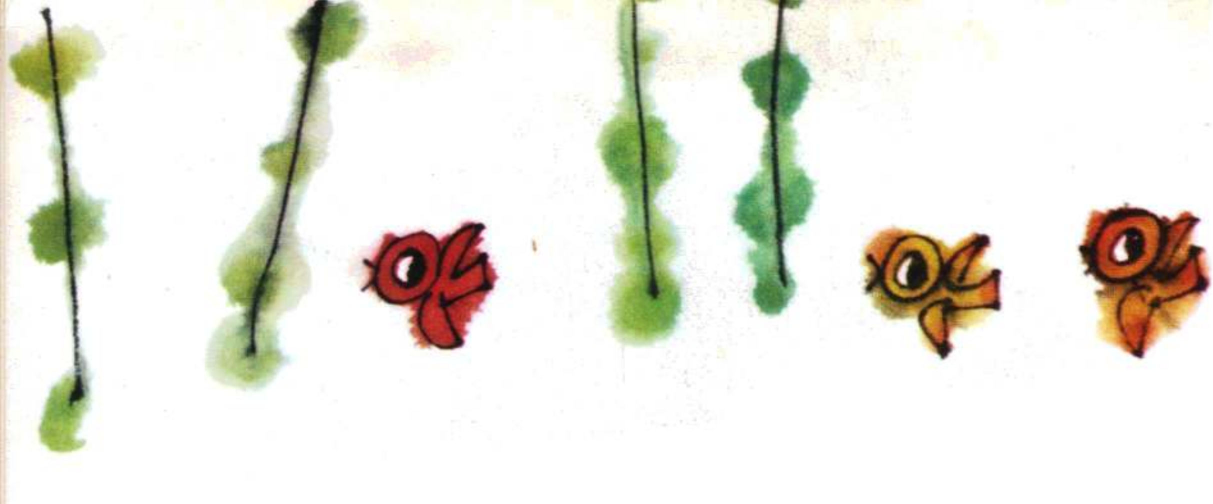
चित्रकार : चान थुङ

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ

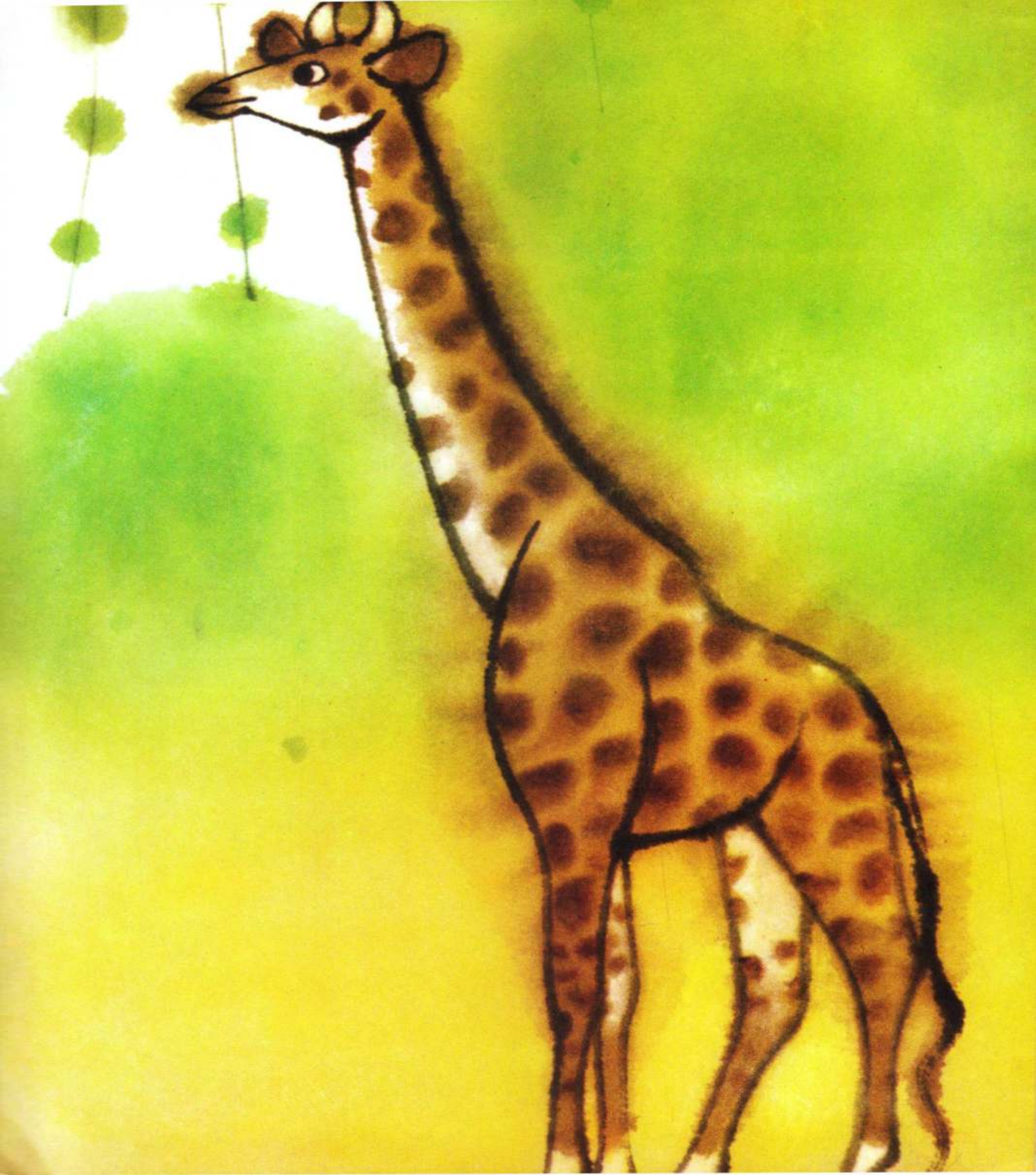
बहुत चतुर वनमानुष काला,
फुर्ती से स्केटिंग-साइकिलिंग सीखता,
कभी कूदता, कभी लुढ़कता,
सुबह-शाम वह कभी न थकता।





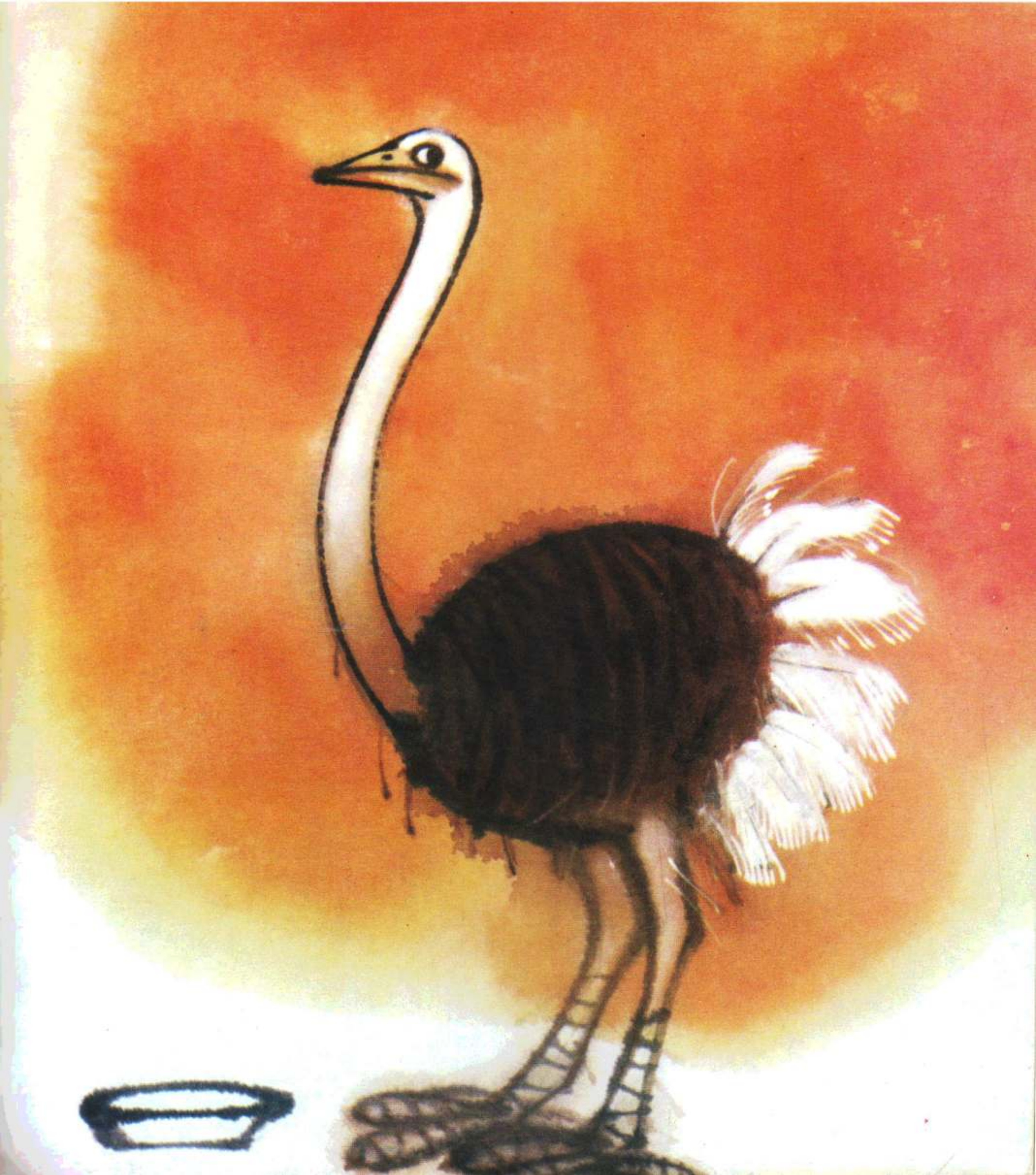


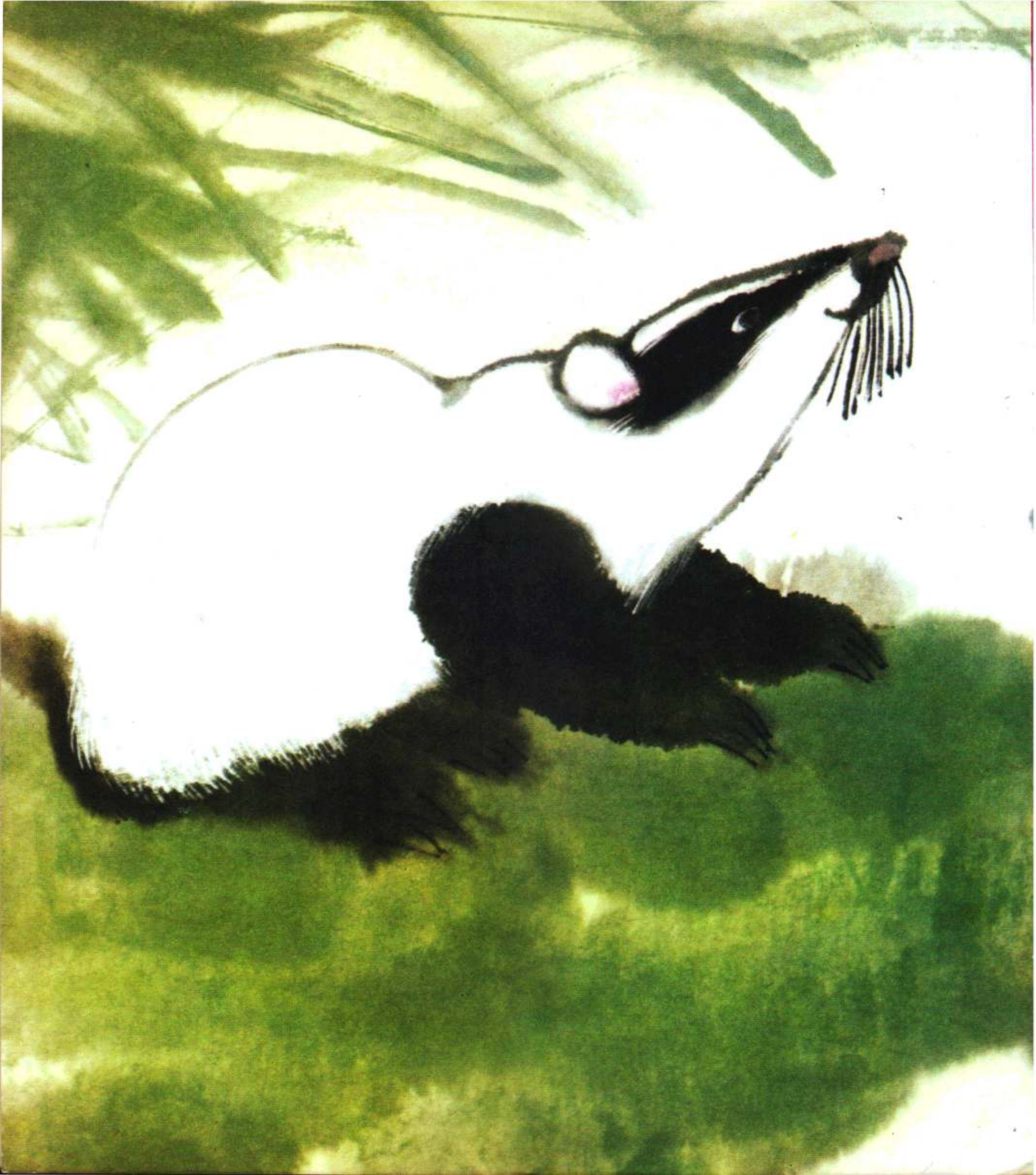
कद जिराफ का काफी लम्बा,
गर्दन उसकी इतनी लम्बी कि फुनगी तक पहुंच है जाती।
हरी पत्तियां चबा-चबाकर,
खाने में आसानी होती।





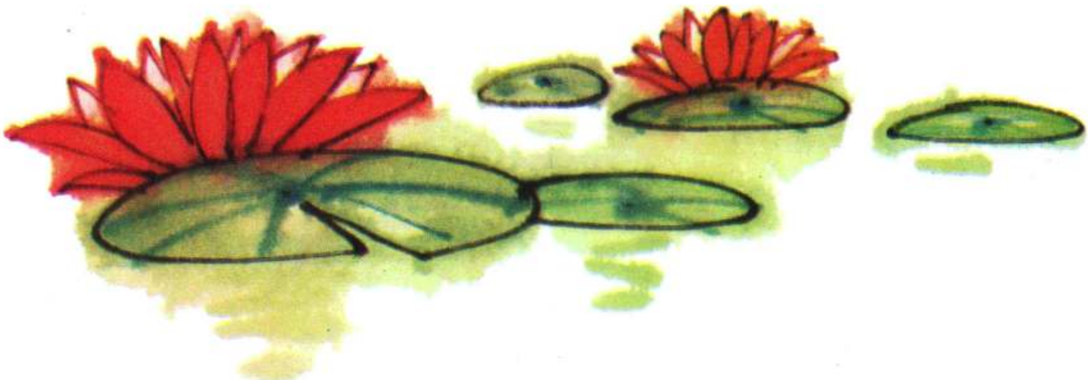
शुतुरमुर्ग भी खूब अजूबा, कद उसका मनुष्य से लम्बा,
पक्षी है किन्तु उड़ नहीं सकता, केवल भूमि पर दौड़ ही सकता।
बहुत बड़ा-सा अंडा देता,
जो कई बच्चों के लिये काफी होता।



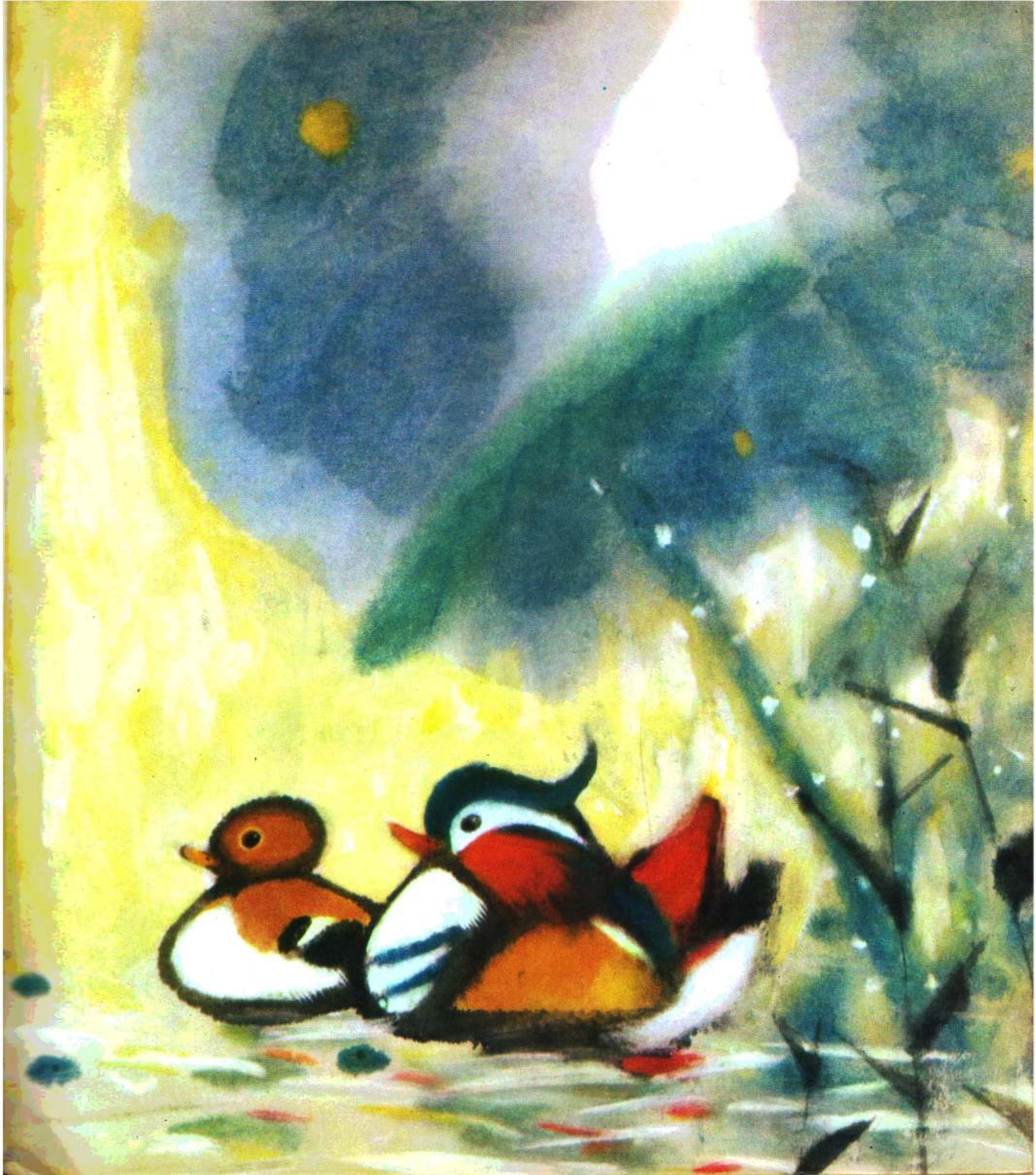




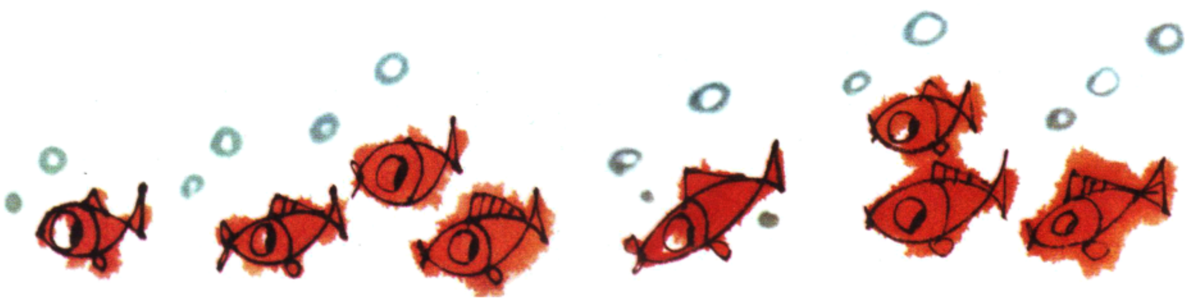
बिज्जू अपनी खोह स्वयं बनाता,
फिर बड़े मजे से उसमें रहता।
बिछा घास-पात का बिस्तर,
सोता गहरी नींद रात भर।

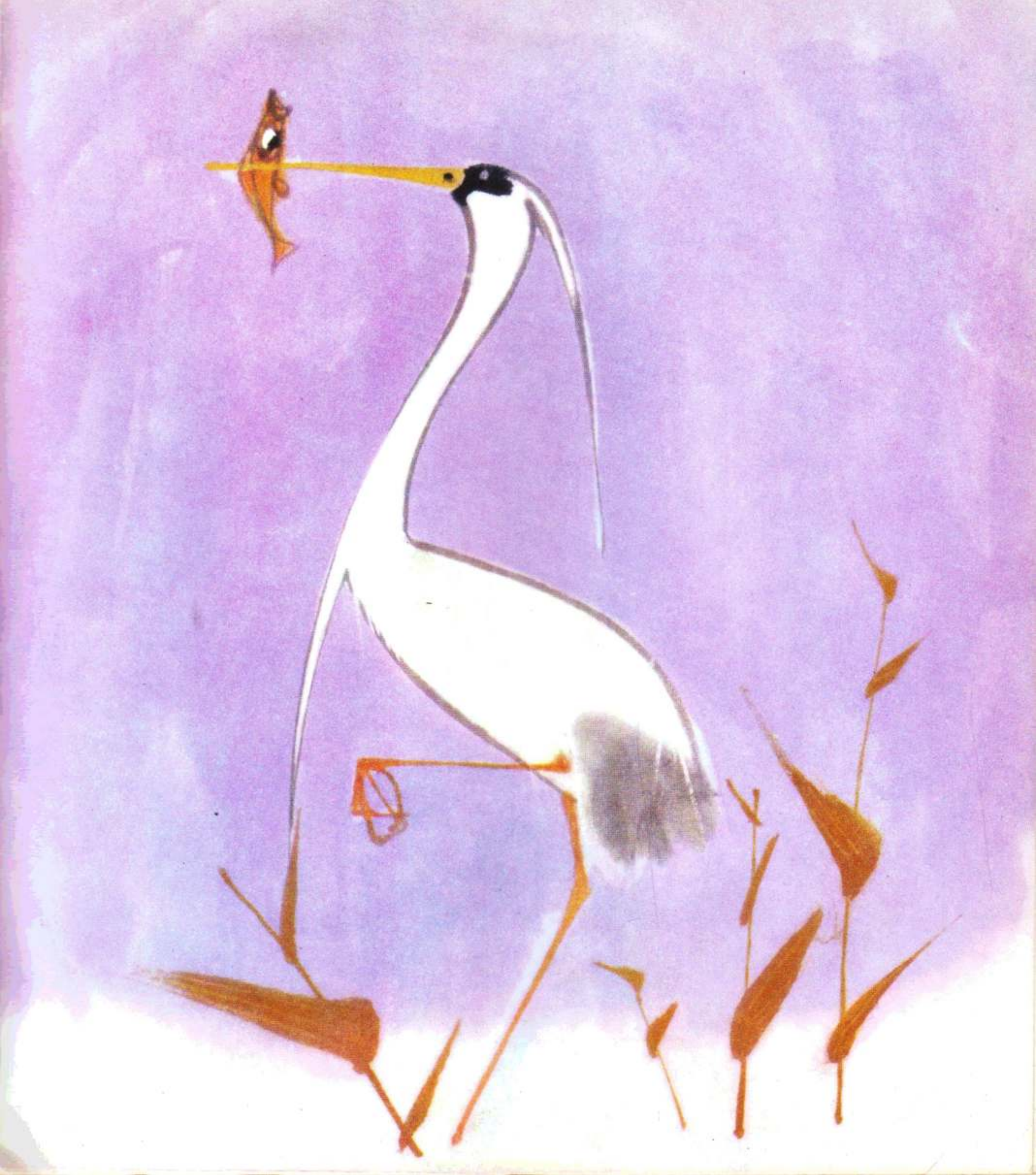


मदारिन बत्तखें जोड़े में रहतीं,
तैरते-उड़ते कभी अलग न होतीं।
आया वसन्त वे उत्तर उड़ जातीं,
पतझड़ में वापस दक्षिण आ जातीं।

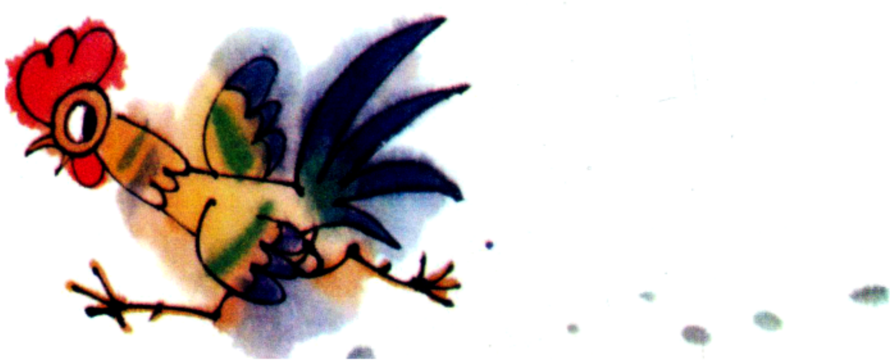


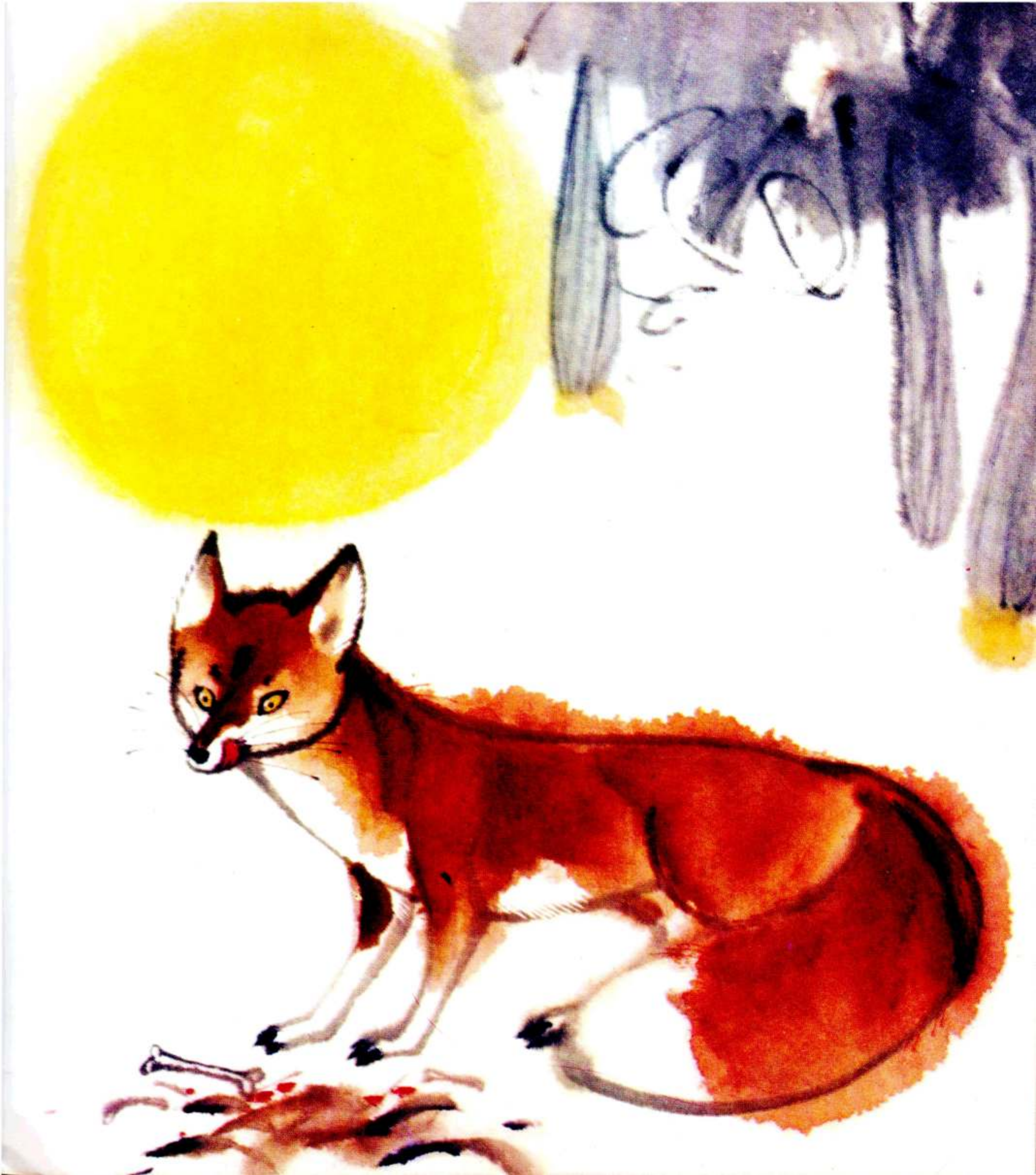
बगुले की टांगें हैं लम्बी और पतली,
लगी नजर पानी में उसकी।
देखी ज्यों ही उसने मछली,
पकड़ चोंच से फौरन निगली।





चालाक बहुत यह धूर्त लोमड़ी,
दबे पांव है चलती-फिरती।
ताक-झांक में हर दम रहती, मक्कारी से बाज न ग्राती,
पकड़ मुर्गियों-खरगोशों को चोरी से वह चटकर जाती।



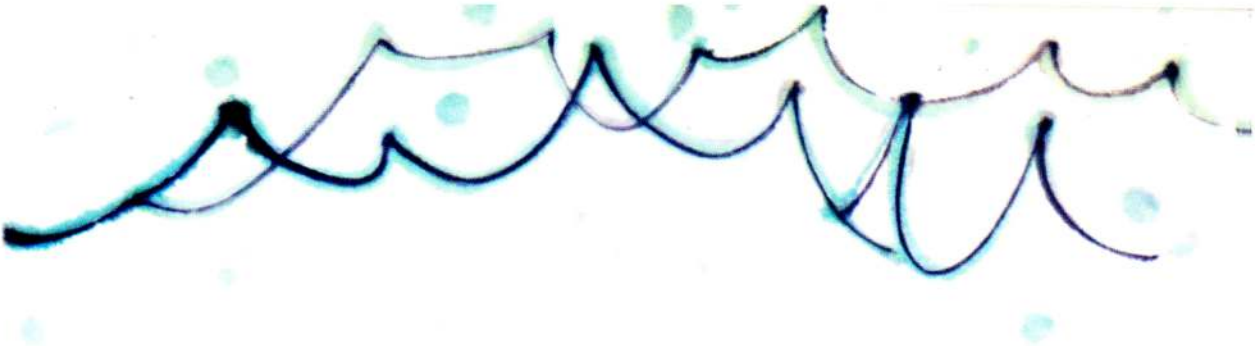




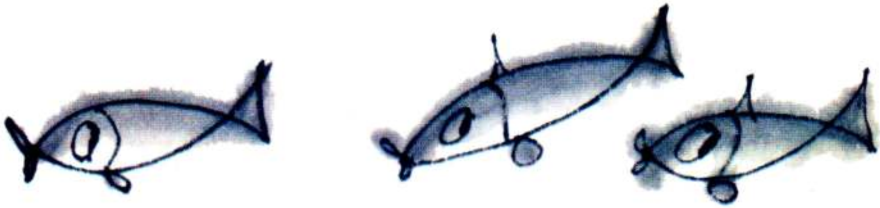
उल्लू रात को ड्यूटी देता,
आंखें फाड़े वह शाखा पर बैठा रहता।
निकला चूहा ज्यों ही बिल से,
उसे पकड़कर झट खा जाता।

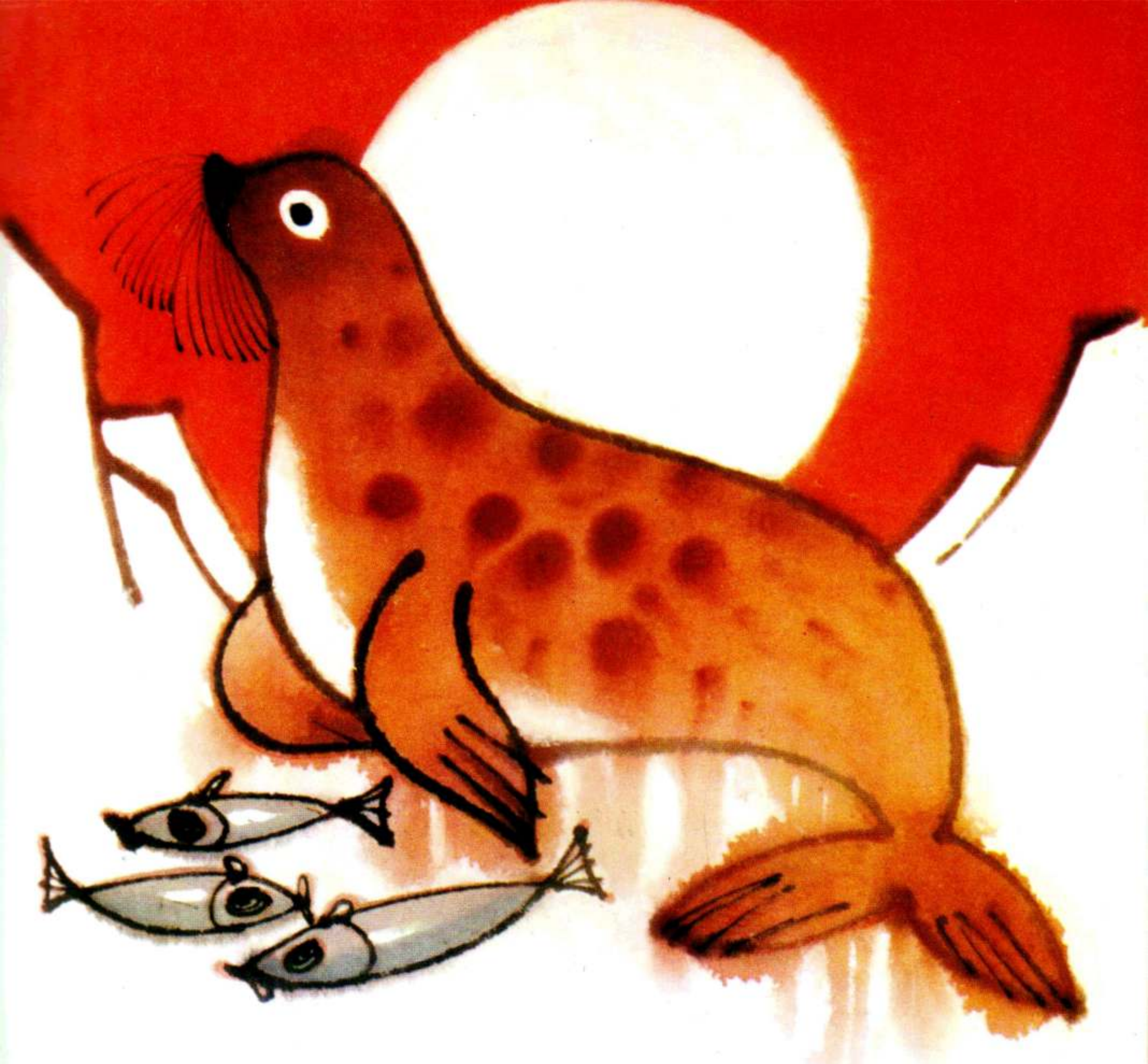


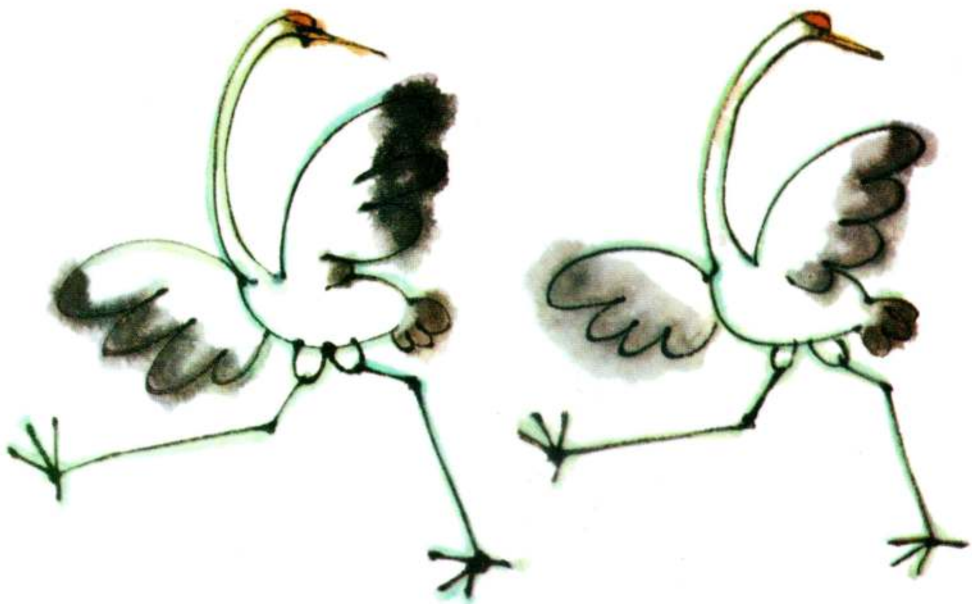




पत्तू जैसे पैरों वाला सील नाम का यह चौपाया,
लेट बर्फ पर क्रीड़ा करता ।
लगी भूख कूदा सागर में,
पकड़ मछलियां रखी मुंह में ।







सारस का कद काफी लम्बा,
सिर पर टोपी लाल पहनता।
दिनभर गाता और उछलता,
फैले पंखों में वह अति सुन्दर लगता।





कौड़िल्ले की चोंच नुकीली,
उसे पसन्द है झींगा-मछली ।
पानी की सतह के निकट वह उड़ता रहता
नदी-किनारे ही अपना घोंसला बनाता ।

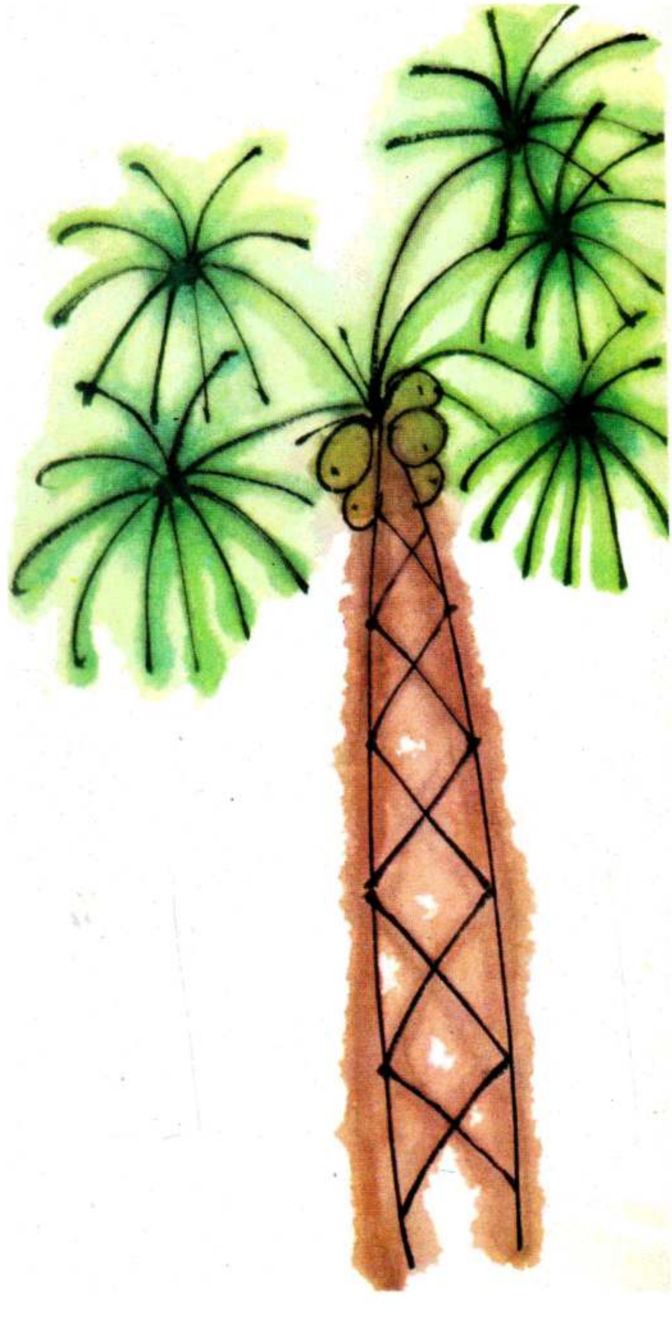


सिर्फ चीन में मिलता यह बन्दर,
बाल हैं जिसके सुनहरे, मनोहर।
नीला चेहरा, नाक चिपटी-सी,
देख उसे दर्शकों की छूट गई हंसी।

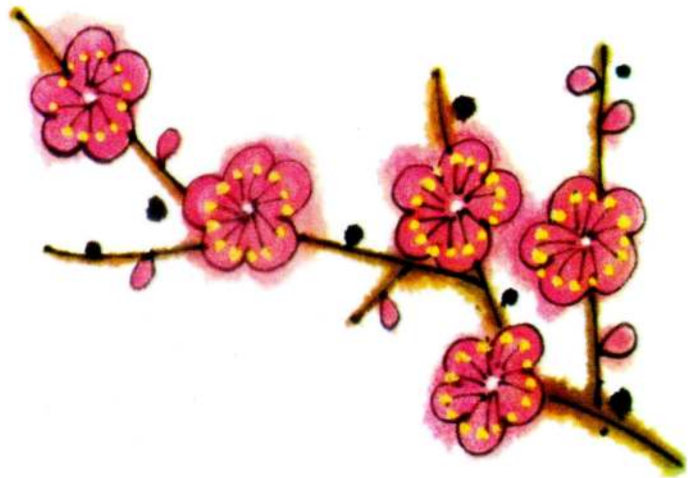








मादा कंगारू का रूप अजीब,
एक थैली-सी बनी पेट पर।
चीजें रखने की नहीं जगह यह,
केवल अपना बच्चा रखती उसमें वह।



चीतल की दुम होती छोटी,
लेकिन सींग डालियों जैसे,
भूरे तन पर श्वेत चित्तियां,
जैसे आलूचे के फूल खिले हों।



जलसिंह है हट्टा-कट्टा,
सर्कस का यह छोटा अभिनेता।
रख गेंद नाक पर करता अठखेलियां,
करतब उसके देख बच्चे बजाते तालियां।





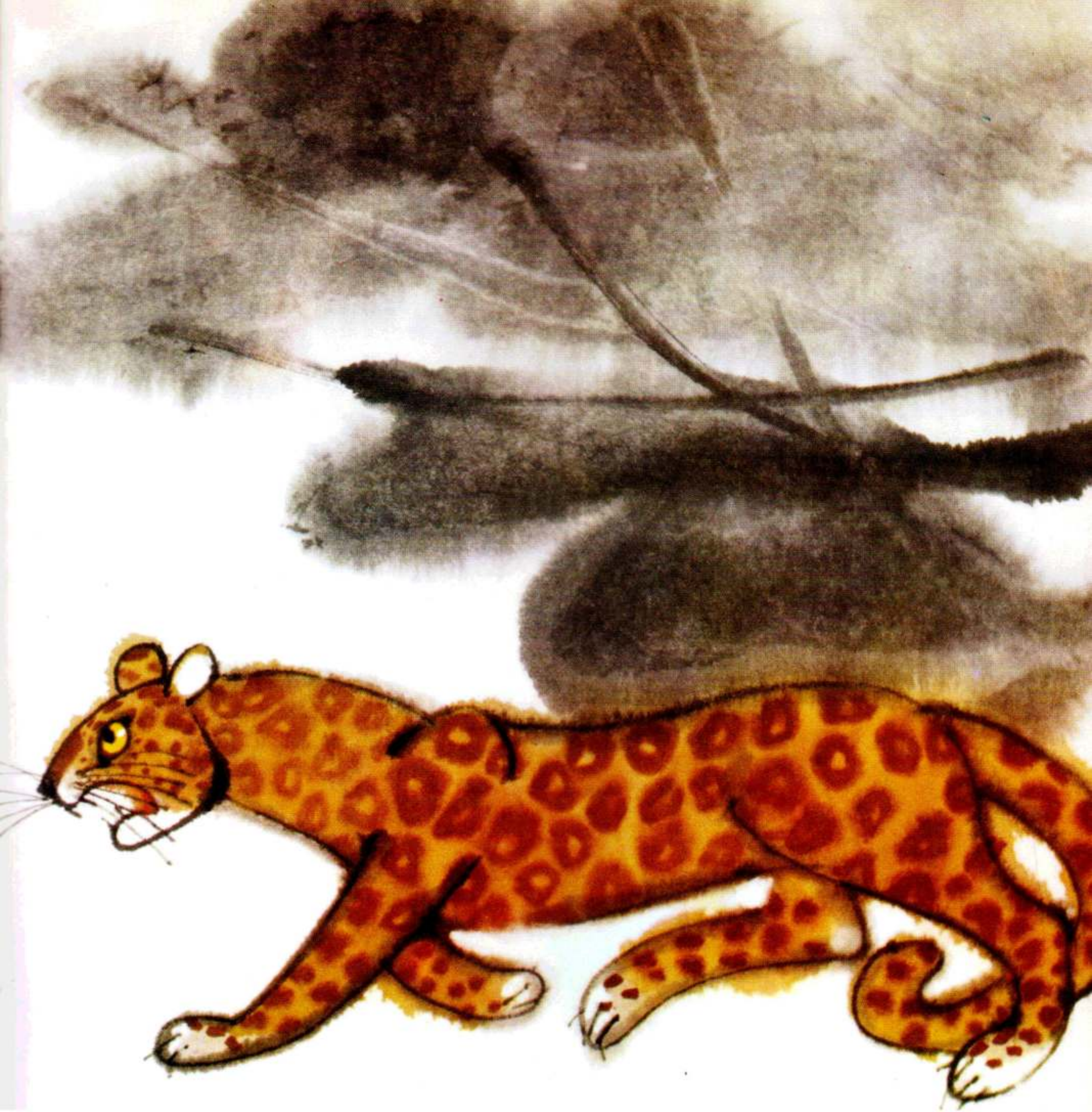


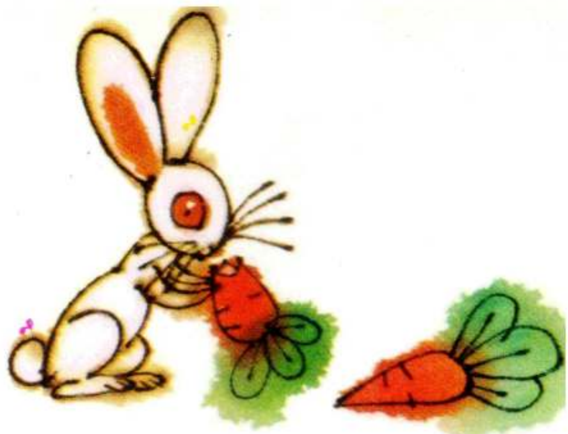


यह सिंह परिवार है देखो,
माता के तन पर हैं छोटे बाल।
बच्चे का होता चित्तीदार शरीर,
अयाल पिता की गर्दन पर है, जिससे वह लगता विकराल।

रंग तेंदुए का है गहरा पीला,
तन पर होते गहरे धब्बे।
है स्वभाव से हिंसक यह पशु,
खरगोश, हिरण उसका भोजन बनते।







सफेद खरगोश के कान हैं लम्बे,
ग्रांखें लाल, होंठ चिरे से।
सागपात-शलगम वह खाता,
उछल-कूद में हर दम खुश रहता।





जंगल में है मोर नाचता,
लम्बी दुम में सुन्दर लगता।
फैले पंख हैं रंग-बिरंगे,
लगते सोने-चांदी के पंखे-से।



बादामी रंग का हिरण – कुरंग – यह,
चरते वक्त भी चौकन्ना रहता।
थोड़ी-सी आहट मिलते ही,
यह द्रुतगामी पशु हवा हो जाता।



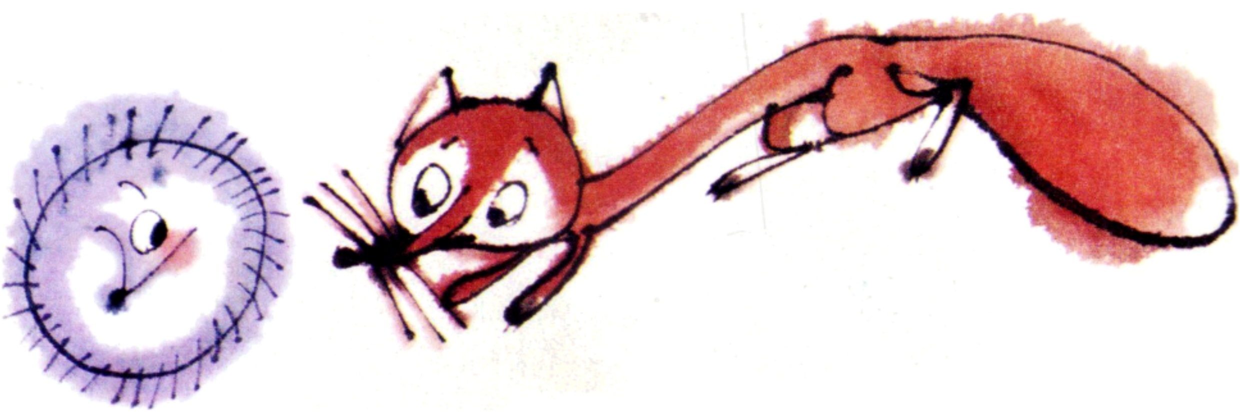


पंडा जीव है दुर्लभ, न्यारा,
सिर्फ चीन में पाया जाता।
बांस की कोपलें पसन्द यह करता,
देखने में बहुत प्यारा लगता।





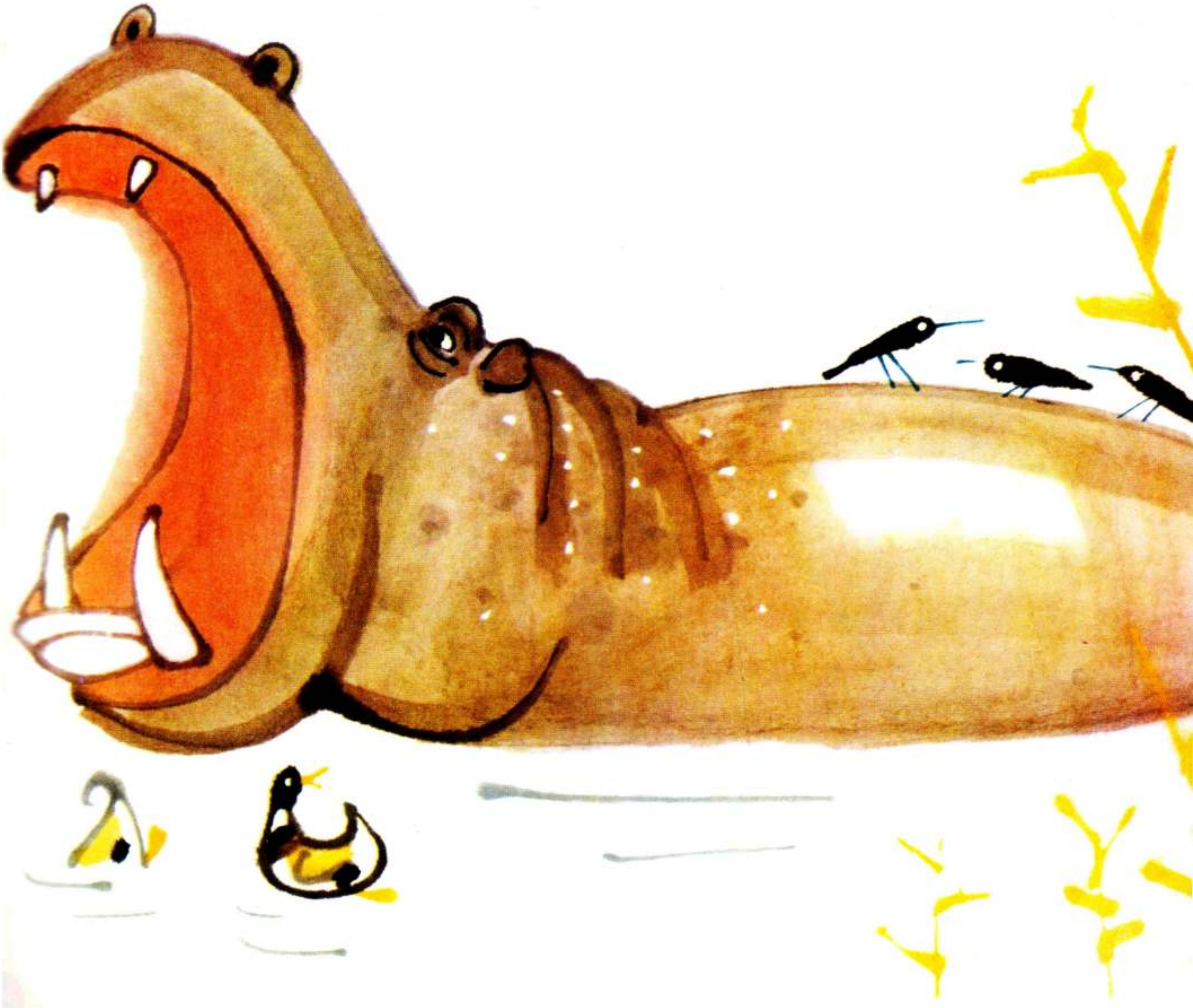
साही के तन पर कांटे ही कांटे,
कीड़े-मकोड़े, फल खाती यह।
हुआ सामना दुश्मन से जब,
गेंद-समान लुढ़क जाती यह।







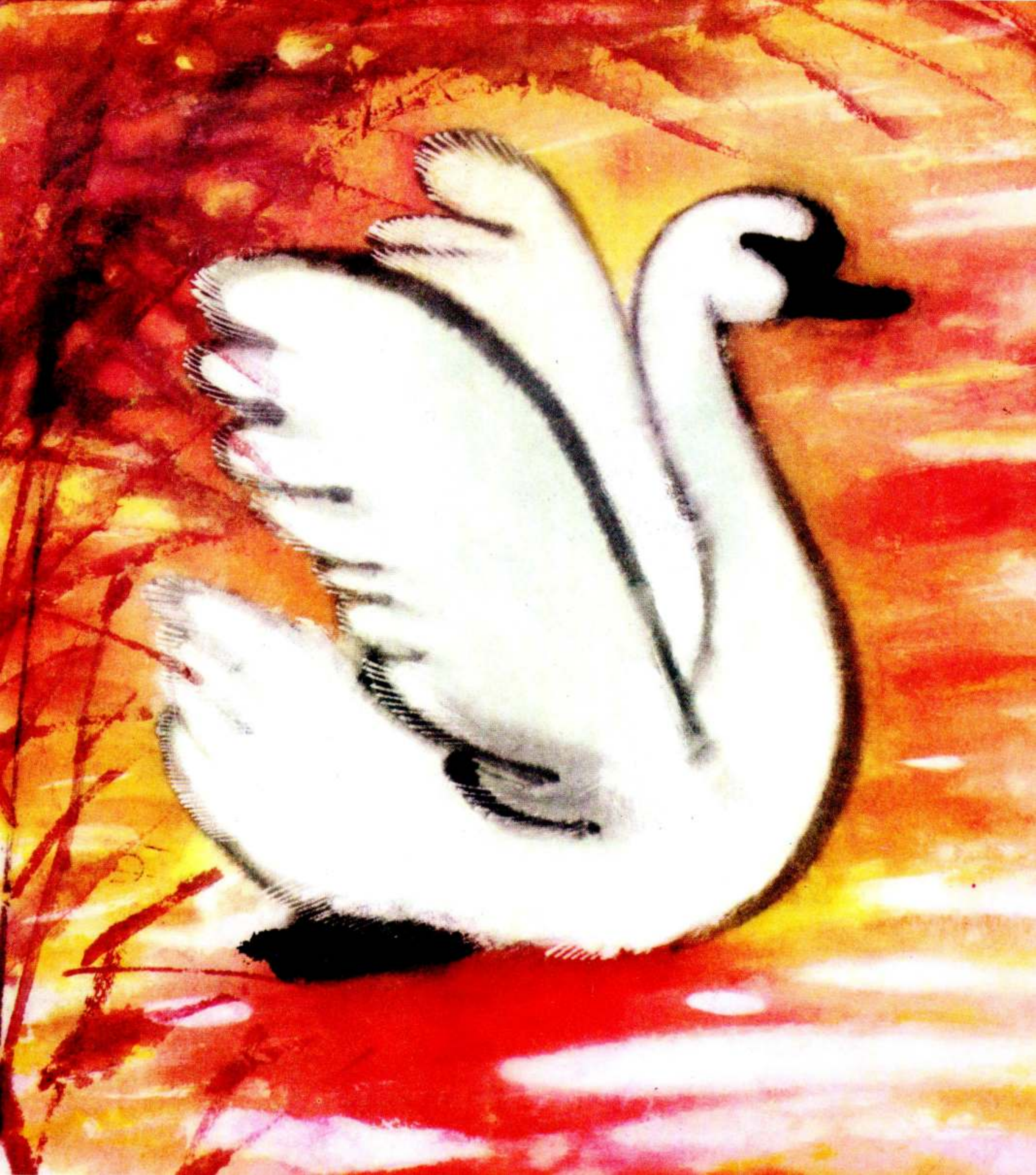
विशालकाय दरियाई घोड़ा,
पानी में रहना पसन्द यह करता।
एक बार में ढेरों आलू,
खाकर भी उसका पेट न भरता।



वाकचतुर होती है मैना,
बिल्ली की तरह "म्याऊं" कर सकती।
मुर्ग-समान "कुकड़ूं-कूं" बोल सकती,
और मनुष्यों से "नमस्ते!" भी वह कहती।









राजहंस बर्फ-समान श्वेत हैं होते,
पंक्ति बना वे ऊंचे उड़ते।
पर्वत, सागर को पार करते,
मानो नील गगन में श्वेत मेघ हों उड़ते।

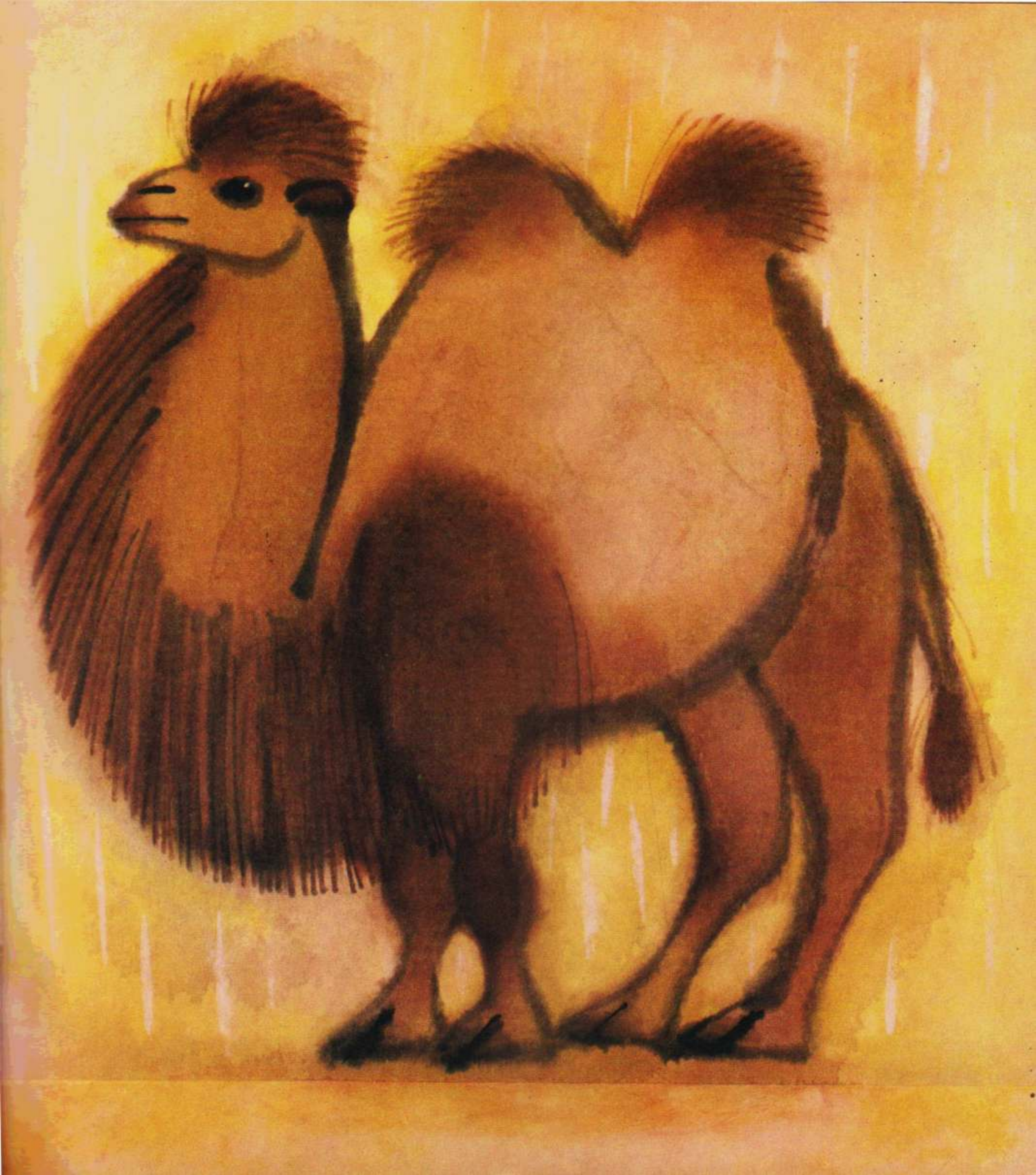
काला भालू चंचल होता,
शहद चुराने पेड़ पर चढ़ता।
जरा संभल! कहीं मधुमक्खी डंक न मारे,
और फिसलकर तू नीचे न आ गिरे!



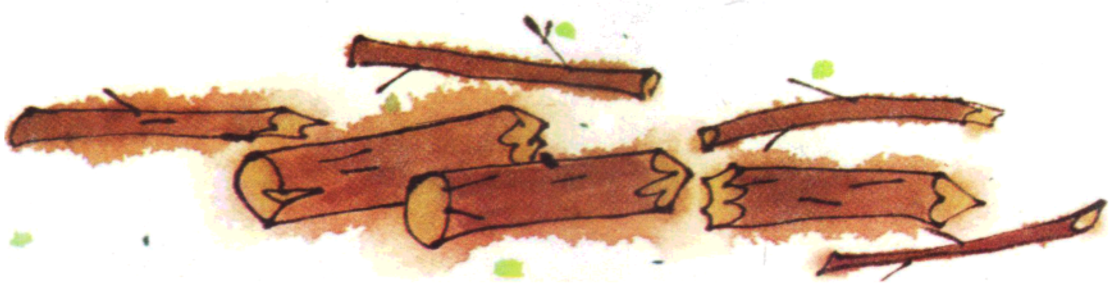


ऊंट मरुस्थल का पोत कहलाता,
थोड़ा खाता, थोड़ा पीता, फिर भी हर दम चलता रहता।
रेतीले तूफान में झुककर, घुटनों के बल बैठ है जाता,
जब गुजर गया तूफान, तो फिर वह धीरे-धीरे आगे बढ़ता।

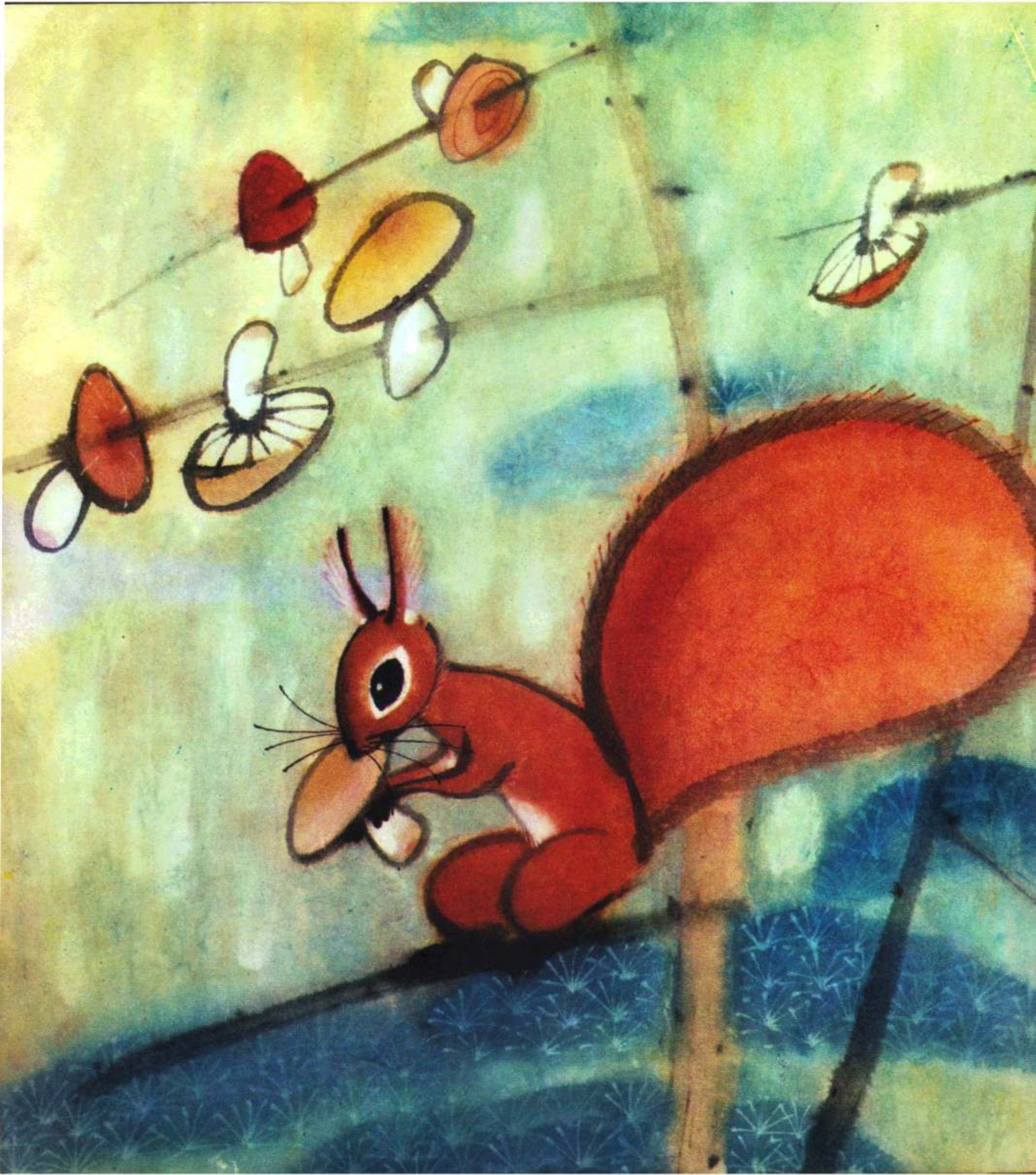




ऊदबिलाव जंतु हैं ऐसे जो जल-थल दोनों में रहते,
दांतों से मिट्टी खोद-खोद वे समुद्र-किनारे खोह बनाते।
पकड़ मछलियां खाने में वे सारा दिन व्यस्त हैं रहते,
फिर मां, बेटे और बाप सब खोह में जाकर हैं सो जाते।



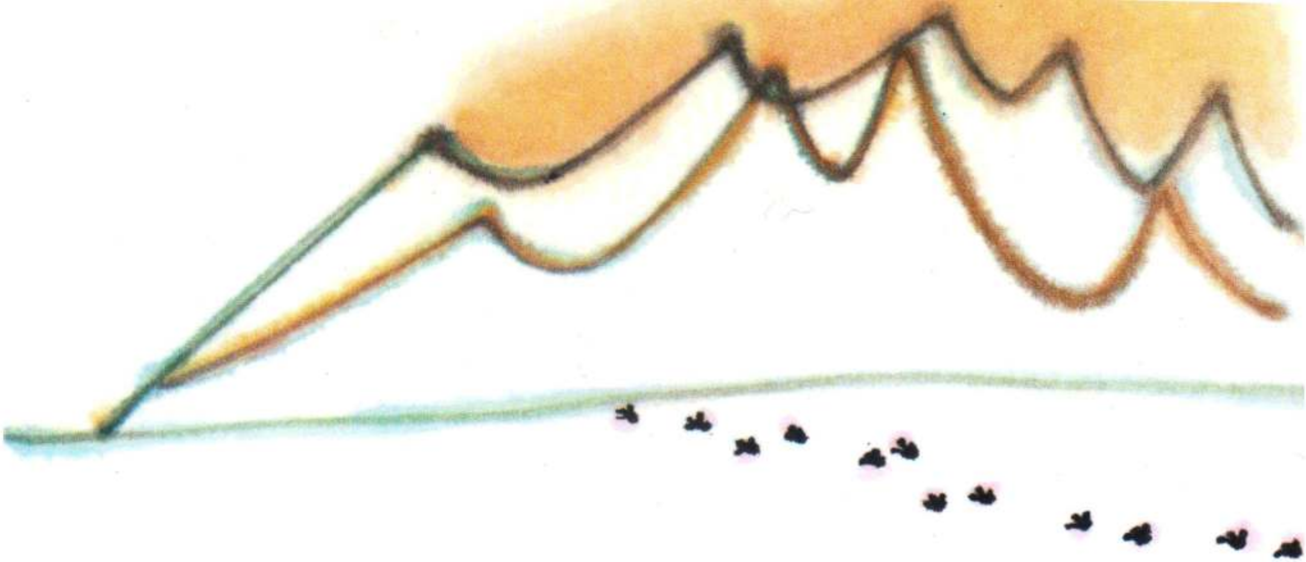




गिलहरी छोटी और प्यारी होती,
दुम उसकी पैराशूट समान है होती ।
वह पेड़ों पर खूब खेलती और कूदती,
ऊंचे से छलांग लगाकर भी हरगिज घायल न होती ।







प्यारे पेंग्विन काले होते, किन्तु सीने सफेद होते,
खड़े बर्फ पर धूप सेंकते ।
पक्षी हैं किन्तु उड़ नहीं सकते,
स्वादिष्ट मछलियां पकड़कर खाते ।





बाघ का बच्चा प्यारा-प्यारा,
जो उत्तरपूर्वी चीन में मिलता।
हालांकि वह अब भी बहुत छोटा दीखता,
पर उसे छेड़ने का साहस किसको होता?

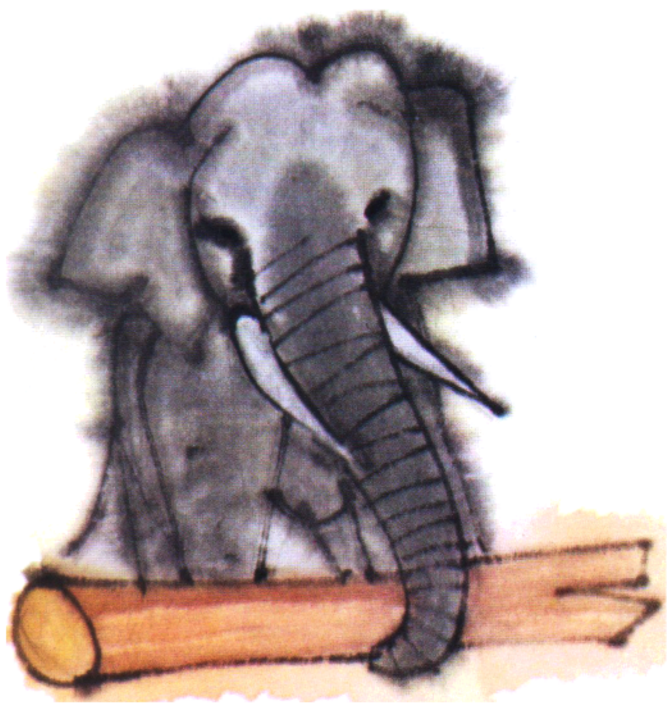




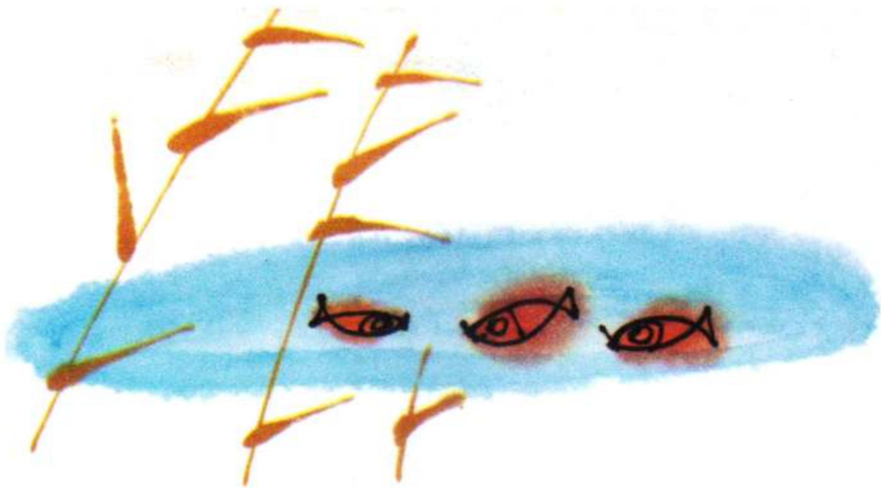
जेबरे का सुन्दर धारीदार बदन,
जिसे देख हर्षित हुआ मन।
सफेद शरीर पर काली-काली पट्टियां,
जैसे कहीं खिली धूप हो और कहीं छाया।



हाथी इतना ताकतवर है
कि शेर-बाघ भी उससे डरते।
जब वह अपनी सूंड उठाता,
मोटे पेड़ उखड़ गिर जाते।







ऊद की मूंछें बिल्ली जैसी,
तैर भी सकता वह खूबी से।
मारी डुबकी, पकड़ी मछली,
बैठ किनारे छकी मजे से।



रैकून का रंग है भूरा लाल,
होता है सफाईपसन्द वह ।
कई बार धोकर मछली को,
बड़े मजे से खाता है वह ।







动　物　园
林颂英　文
詹　同　画
*
外文出版社出版
（中国北京百万庄路24号）
外文印刷厂印刷
中国国际书店发行
（北京399信箱）
1983年（20开）第一版
编号：（印地）8050—2262
00170
88—H—174P

